

# धरती का क्यों नहीं रखा ख्याल ?

होशंगाबाद के पास रोहना गांव के रूपसिंह अब रासायनिक खेती को छोड़कर जैविक खेती कर रहे हैं। वे कहते हैं खेतों की मिट्टी नशीली हो गई है। हर साल रासायनिक खाद की मात्रा बढ़कर डालनी पड़ती है। इससे लागत तो बढ़ती है पर उपज नहीं बढ़ती। जबकि जैविक खेती में क्रमशः लागत कम होती जाती है और उपज उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। मिट्टी में सुधार होता जाता है। वे खुद तो जैविक खेती कर रहे हैं बल्कि दूसरे किसानों को भी इसकी ओर मोड़ रहे हैं।

रूपसिंह कहते हैं उनके खेत की मिट्टी अनुपजाऊ और सख्त हो चली थी। मिट्टी को उर्वर बनाने वाले सूक्ष्म जीवाणु खत्म हो गए थे। लेकिन सबसे जैविक खेती कर रहे हैं तबसे मिट्टी भुरभुरी, पोली और हवादार हो गई है। केंचुआ खाद, नडेप खाद और जीवामृत के प्रयोग से मिट्टी को उपजाऊ बनाने वाले सूक्ष्म जीवाणु हो गए हैं। हर साल मिट्टी सुधरती जा रही है। और उत्पादन भी बढ़ रहा है। अभी उनके खेत में गेहूँ की अच्छी फसल है।

दरअसल, खेतों की मिट्टी बंजर होना, रासायनिक खादों का बेजा इस्तेमाल का नतीजा है। हरित क्रांति के नाम पर शुरू की गई रासायनिक खेती में कीटनाशक, फफूंदनाशक, कृमिनाशक, चूहेमार दवाएं, खरपतवार नाशक, रासायनिक खादों का अंधाधुंध प्रयोग किया गया। इससे हमारी खेती का जो नुकसान पिछले सैकड़ों सालों में नहीं हुआ, वह चार-पांच दशकों में हो गया। इन रासायनिक खादों के बेजा इस्तेमाल ने अब विनाशकारी असर दिखाना शुरू कर दिया। इसने जहां एक ओर हमारे स्वास्थ्य, हमारे पशुओं के स्वास्थ्य को प्रभावित किया है, वहीं दूसरी ओर हमारे खेतों की मिट्टी को अनुपजाऊ एवं जहरीला बना दिया है।

मिट्टी मृत नहीं, जीवित है। इसमें प्राकृतिक रसायनों के साथ असंख्य जैव पदार्थ हैं। अनगिनत जीव-जंतु, बैक्टीरिया, फफूंद, शैवाल आदि मौजूद हैं। ये जैव पदार्थ या सूक्ष्म जीवाणु मिट्टी में ही पोषित और बढ़ते जाते हैं। ये सभी मिल-जुलकर अपना-अपना काम चुपचाप निस्वार्थ भावना से करते रहते हैं। जिससे मिट्टी की उपजाऊ क्षमता बनी रहती है। अच्छी मिट्टी हजारों सालों में बनती है और उतना ही समय बंजर जमीन की जगह लेने में उसे लगता है। मिट्टी से ही पोषक तत्व मिलते हैं। मिट्टी में जीवन सूक्ष्म जीवाणु प्रदान करते हैं और वे ही फसल की बढ़वार में मददगार होते हैं। लेकिन रासायनिक खादों के इस्तेमाल से ये मर रहे हैं। ऐसा कृषि

## ■ बाबा मायाराम

वर्ष 1965 में अमरीका ने वियतनाम को सबक सिखाने के लिए एजेंट ओरेंज नामक रसायन का छिड़काव किया जिससे लाखों हैक्टेयर जंगल, जैव विविधता और असंख्य जीव-जंतु तबाह हो गए थे। जिन वियतनामी सैनिकों या नागरिकों पर इसका असर पड़ा हाल में पैदा होने वाली उनकी दूसरी पीढ़ी तक विकलांग पैदा हुई। इसी तरह मध्यप्रदेश की राजधानी वर्ष 1984 में रसायनों के दुष्प्रणामों को देखा जा चुका है, जहां हजारों लोग, पशु-पक्षी देखते-देखते एक ही रात में काल के गाल में समा गए थे। तथा पेड़ टूट हो गए। इसका असर भोपाल की मिट्टी और पानी में अब भी है, ऐसा अध्ययन बताते हैं। रसायनों के अलावा, मिट्टी खराब करने में बड़े बांध, अधिक सिंचाई और औद्योगिक कार्यकलापों का भी योगदान है। बड़े बांधों से लवणीकरण और दलदलीकरण की समस्याएं उभरकर सामने आई हैं। तवा बांध में भी यह समस्या उभरकर सामने आई है।

वैज्ञानिक भी मान रहे हैं। दरअसल, मिट्टी का जीवन उसमें प्रवाहित वायु और जैव पदार्थों की मात्रा पर ही निर्भर करता है। जैव पदार्थों की मात्रा इस बात पर निर्भर करती है कि मिट्टी में वायु की प्रचुरता, जल ग्रहण और जल निकासी ठीक ढंग से हो। मिट्टी में मौजूद ये सूक्ष्म जीव जैव पदार्थों को गलाकर उसको पौष्टिक मृदा में परिवर्तित कर देते हैं। यह पौष्टिकता संपन्न मृदा ही भूमि की ऊपरी सतह बनाती है। और यही जमीन का सबसे उर्वर भाग होता है। कृषि में मिट्टी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसी पर कृषि आधारित है। भूमि की उचित देखभाल न होना उत्पादकता की कमी का एक प्रमुख कारण है। मिट्टी को दानेदार, भुरभुरी, गहरी, अच्छी हवादार बनाए रखना इसकी उर्वरा शक्ति बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

जमीन की जलधारण क्षमता उसकी रचना पर निर्भर होती है। और इसमें उगने वाले पौधों की वृद्धि को प्रभावित करने वाला कारण है।

मुख्य रूप से मिट्टी के तीन प्रकार बताए जाते हैं— रेतीली, मटियारी और दूमट। रेतीली यानी रेतीली (सैरा) मिट्टी में जैव पदार्थ बहुत कम होते हैं किन्तु उनके कणों के बीच में अंतर बहुत बड़ा होता है। इसलिए यह पानी जल्दी सोख लेती है। दूसरी तरफ मटियारी मिट्टी में चिकनी मिट्टी की मात्रा अधिक होती है। और ऐसी मिट्टी में पानी नीचे नहीं समाता। जमा रहता है जिससे पौधे पानी में सड़ जाते हैं। जबकि दूमट मिट्टी में जैव पदार्थ की मात्रा व कणों के बीच का अंतर ठीक

अनुपात हो जाता है इसलिए ऐसी मिट्टी खेती के लिए सबसे अच्छी मानी जाती है। नर्मद कछर की काली कपासीय मिट्टी (ब्लैक कॉटन सॉइल) है। इसका रंग कहीं भूरा तो कहीं गहरा काला होता है। मिट्टी की रचना मटियारी है। यहां कम पानी या अर्सिंचित अवस्था में भी अच्छी फसलें होती थी। काली मिट्टी गेहूँ और अन्य फसलों के लिए बहुत अच्छी मानी जाती है। इसमें गहरी जुताई की जरूरत नहीं होती। बिना सिंचाई की खेती होती थी।

इस क्षेत्र की खेती-किसानी का अध्ययन कर चुके शिक्षाविद् कमल महेन्द्रू बताते हैं कि यहां हल की जुताई नहीं होती थी, इसके कई कारण हैं। एक तो यहां बारिश के मौसम में खूब पानी होता था लेकिन उसके बाद पानी गिरिगा कि नहीं, यह मालूम नहीं होता। इसलिए खेत में अधिक समय तक नमी बनी रहे, बक्खर से उसे छोल देते थे। यानी जब घास-फूस खरपतवार हो जाए तो उसकी छुलाई कर देते थे। छोलना मतलब जैसे दाढ़ी को छोलते हैं उसी तरह जमीन की छुलाई। (बाकी पेज 11 पर)